देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115
February 2023
Vol.-17, Issue-2
Impact Factor
7.523

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

सम्पादक : डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

फरवरी 2023

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	प्रो. शकुन्तला	9-9
2.	थर्ड जेंडर : एक दर्द भरी दास्तान (हिंदी साहित्य के संदर्भ में)	डॉ. भावना	10-15
3.	वैश्वीकरण और मानवाधिकार	हरकेश मीणा	16-20
4.	जनजातीय क्षेत्र पांगी की धार्मिक लोक कथाओं का सामाजिक विश्लेषण	राज कुमार	21-28
5.	कुल्लवी लोकगीतों में अभिव्यक्त रस एवं अलंकार	संगीता देवी	29-42
6.	माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के नियंत्रण अवस्थान का उनकी उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं आत्मसम्प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन	डॉ. राजेश शर्मा, सुनिता शर्मा	43-49
7.	मालती जोशी की कहानियों में चित्रित परिवारों में बदलते नाते	E. Jacqueline, Dr. Anuradha Pakalapati	50-54
8.	वाल्मीकि रामायण में निरूपित शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन	डॉ. राजेश शर्मा, विद्या शर्मा	55-59
9.	A Study of Creativity across Gender among Teacher Trainees in Relation to Their Thinking and Learning Style and Problem Solving Ability	Dr. Suman Rani, Seema Wadhwa	60-65
10.	आदिवासियों की त्रासदी का जीवंत दस्तावेज 'डूब' और 'पार'	सरिता कुमारी	66-69
11.	यशपाल की कहानियों में सुधारवादी दृष्टिकोण	डॉ. सी.हेच.वी.महालक्ष्मी	70-72
12.	राजर्षि संत पीपा के साहित्य में पर्यावरणीय चेतना	डॉ. आदित्य कुमार गुप्त, रामकिशन माली	73-80
13.	औद्योगिकरण से पर्यावरण प्रदूषण	सुमित कुमार जाट	81-85
14.	सार्वभौम एवं सार्वजननीन वैदिक धर्म	डॉ. कविता जैन	86-89
15.	मानवीय विकास में वैदिक शिक्षा	डॉ. जोगेन्द्र कुमार	90-93
16.	ममता कालिया का व्यक्तित्व	डॉ. संजय कुमार यादव	94-98

17.	श्री भर्तृहरि विरचित नीतिशतकम् में वर्णित मूर्ख पद्धति की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सार्थकता	डॉ० केसर कमल शर्मा	99-101
18.	राजेश जोशी की कविताओं में युगबोध	उर्वशी सिंह	102-108
19.	फलौदी परगने के स्वतंत्रता सेनानी	दिनेश गहलोत	109-115
20.	हिन्दी के दलित नाटक	डॉ. अनीश के.एन.	116-122
21.	SIGNIFICANCE FACT OF PURITAN AGE	SHASHI KUMAR	123-127
22.	लोकतंत्र में संसदीय संस्कृति की संकल्पना	डॉ. ब्रजकिशोर	128-132
23.	समकालीन हिंदी कविता का लोक-पक्ष	डॉ. गिरीश कुमार के.के.	133-140
24.	रवीन्द्र कालिया के कथा साहित्य में मुस्लिम परिवेश	डॉ० दारा योगानंद	141-145
25.	अशोक चक्रधर की कविताओं में समसामयिक समस्याओं पर व्यंग्य	रवि प्रकाश	146-150
26.	ब्रिटिश भारत में महिलाओं की स्थिति	स्वेता कुमारी	151-154
27.	Savtribai Phule-The pioneer of Indian Education : An Introduction	Aparna Verma	155-160
28.	शिक्षा और संस्कृति	डॉ. अल्पना शर्मा	161-164
29.	Ramifications of economic changes and democratic participation – a study of citizens of West Bengal	Atashi Bhattacharya, Dr. N. Sushil K Singh	165-175
30.	Effect of Specific Yogic Exercise on the Shooting Performance of Basketball Players	Simple Purohit, Dr. Surjeet Singh Kaswan	176-179
31.	Financial Problems in Execution of Physical Education Curriculum	Mrs. Jandeep Kaur, Dr. Braj Kishor Choudhary	180-183
32.	सरहदों को नकारती एक औरत की कहानी : रेत समाधि	कविता चूर	184-187
33.	चारुदत्तम् की प्राकृत में प्रयुक्त तिङन्त क्रियारूप	डॉ. अश्विनी कुमार	188-192

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
February 2023 Page No. : 50-54

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

मालती जोशी की कहानियों में चित्रित परिवारों में बदलते नाते

E. JACQUELINE, Ph.D. Scholar,

Dr. ANURADHA PAKALAPATI, Assistant Professor,

Department of Hindi, School of Languages, Vels Institute of Science, Technology and Advanced Studies (VISTAS)

भूमिका :-

औद्योगिकीकरण, नगरीकरण, आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण, उदारीकरण समाज को परिवर्तित करने का कारक हैं। इन परिवर्तनों में परिवार और विवाह भी शामिल है। एक ओर पारिवारिक संरक्षण, पारिवारिक संगठन, पारिवारिक परिवेश, पारिवारिक गतिविधियों और पारिवारिक स्वरूपों में परिवर्तन हुए तो दूसरी ओर वैवाहिक संरचना स्वरूप में भी कई परिवर्तन हो रहे हैं। इनका प्रसंग हमें मालती जोशी जी की कहानियों में देख सकते हैं। इन परिवर्तनों और उनके सक्रिय भागों के बारे में चर्चा इस इकाई में प्रस्तुत की गई है।

परिवार का अर्थ एवं परिभाषा :-

परिवार ही समाज की मुख्य आधार है। आरंभ काल में परिवार का संरचना प्राणी शास्त्रीय आवश्यकताओं के कारण हुआ जो मनुष्य की अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक आवश्यकताओं की पूर्ती का साधन बन गया। अमेरिकी समाज शास्त्री मैकाइवर परिवार को परिभाषित करते हुए कहा, "परिवार वह समूह है जो कि लिंग सम्बन्ध पर आधारित होता है और यह काफ़ी छोटा एवं इतना स्थायी है कि बच्चों की उत्पत्ति और पालन–पोषण करने योग्य है।"[1] इस परिभाषा से स्पष्ट है कि परिवार ही वह समूह है जहाँ पति–पत्नी के यौन संबंधों को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त होती है।

आधुनिक परिवार में परिवर्तन :-

आधुनिक दौर में पारिवारिक परिवेश में परिवर्तन बहुत तेज़ी से क्रियाशील हो रहे हैं। समकालीन संदर्भ में इस बात की आवश्यकता महसूस होती है कि परिवार में होने वाले परिवर्तित विषय में अनुसंधान का अध्ययन किये जाए। मालती जोशी जी की कहानियों में मध्यवर्गीय पारिवारिक परिवेश अधिकांशतः देख सकते हैं क्योंकि वे मध्यवर्गीय परिवार में पली–बढ़ी और विवाह हुई। मालती जोशी जी ने अपने कहानी साहित्य में सामान्य मनुष्य की जिन्दगी में जीवन जीने की विषम आर्थिक स्थितियाँ, वैज्ञानिकीकरण, औद्योगीकरण से उत्पन्न विभिन्न नवीन स्थितियाँ और समस्याएँ, पूँजीवादी व्यवस्था के भयभीत त्रासद परिणाम, नैतिक मूल्यों का विघटन, महानगरीय जीवन की अनेक समस्याएँ, सामाजिक अव्यवस्था के प्रति तीव्र असंतोष, प्रेम का नवीन भाव–बोध, टूटते–बिखरते पारिवारिक संबंध, नारी में आधुनिकता और परंपरा का द्वंद्व, युवा आक्रोश, प्रतिभा की अवमानना, स्त्री–पुरुषों के

संबंधों में बदलाव आदि का यथार्थ चित्रण अधिकांश रूप में किया है।

संयुक्त परिवार का परिवर्तित स्वरूप :-

संयुक्त परिवार भारतीय समाज की अत्यन्त प्राचीन व महत्त्वपूर्ण संस्था है। यह प्रकार का परिवार उन्नीसवीं सदी तक भारतवर्ष में पाया जाता है। इन परिवारों को ज्यादातर गाँवों में दिखाई देती है। औद्योगीकरण, महा–नगरीकरण के कारण संयुक्त परिवार के स्वरूप टूटकर एकल परिवार के स्वरूप धारण लिया है।

परिवार के आकार में परिवर्तन :-

तत्काल के समय में परिवार का आकृति घटता चले जा रहा है अर्थात् पारिवारिक सदस्यों की संख्या सीमित हो जा रही है। लोगों का झुकाव सीमित परिवारों की ओर बढ़ता जा रहा है। परिवार सदस्यों की रुचियों ने परिवारिक सदस्यों की संख्या को सीमित कर दिया है। तत्काल समय में संयुक्त तथा विस्तृत परिवारों के स्थान पर एकल परिवार ही अधिक मात्रा में देखने को मिलते हैं। इस प्रकार के विकसित आधुनिक परिवारों में पति–पत्नी और उनकी अविवाहित संतान ही सम्मिलित रहते हैं।

पति-पत्नी के संबंधों में परिवर्तन :-

पहले के समय में पति में चाहे कितनी भी बुराइयाँ हो, चाहे वह अत्याचारी हो, उसे पत्नी द्वारा परमेश्वर का दर्जा दिया जाता था। पत्नी उसका आदर–सत्कार करती थी। उसकी उचित–अनुचित सभी प्रकार की इच्छाओं का पालन करती थी। पत्नी को पति के भोजन करने के तत्पश्चात ही भोजन करना होता था। इसका उल्लेख मालती जोशी जी की कहानी संग्रह "औरत एक रात है" की कहानी 'स्मृति कल्प' में भी मिलता है। इस कहानी की नायिका शोभा दीदी है। उसकी शादी के कुछ दिन के बाद में पता चलता है कि लड़का तो रोग की पुड़िया है। शोभा ने कहा कि "पति चाहे लंगड़ा, लूला, काना, कूबड़ा हो, तब भी हिन्दुस्थानी पत्नी उसकी दीर्घायु कामना करती है। मनौतियाँ मानती है, क्यों ? क्योंकि उसे मालूम है कि पति के बिना उसका अस्तित्व शून्य है। घर–परिवार में उसका मान–सम्मान, समाज में उसकी प्रतिष्ठा सब पति के दम से होती है।"[2] परंतु वर्तमान समय में ऐसा नहीं है। वर्तमान शिक्षा और सामाजिक चेतना ने स्त्रियों को इतना जागरूक बनाया है कि वे अपने अधिकारों के प्रति समवेत रहना और उन्हीं के अनुरूप व्यवहारों को महत्व देने में समर्थ हो गई हैं। अब वह पति की दासी नहीं अपितु साथी के रूप में जीवन जी रही हैं।

वैवाहिक और यौन संबंधों में परिवर्तन :-

आधुनिक संदर्भ में विवाह और यौन संबंधों में भी काफ़ी परिवर्तन देखने को मिलते हैं। बाल विवाह लगभग पूरी तरह में समाप्त हो चुके हैं और जीवन की व्यवस्था के कारण विवाह में भी बहुत काल होने लगे हैं। साथ ही जीवन साथी के चयन में भी पहले की तुलना में काफ़ी स्वतंत्रता दी जाने लगी है। परिवार द्वारा तय किये जाने वाले व्यवस्थित विवाह की अपेक्षा प्रम विवाह, अदालत विवाह, अंतर्जातीय विवाह की संख्या में दिन प्रति दिन संवृद्ध होता जा रहा है। विवाह के बारे में मालती जोशी जी का मत है, "विवाह केवल प्रणय का बंधन नहीं है। इससे आगे बहुत कुछ है। एक–दूसरे को सहारा देने की शर्त है। परस्पर के प्रति विश्वास के साथ जीने

की शर्त है।"[3] मालती जोशी जी की कहानी 'स्नेहबंध' में अंतर्जातीय विवाह का उल्लेख मिलता है। कहानी की नायिका मीता और कहानी के नायक ध्रूव ने अंतर्जातीय विवाह किया था। माँ ने शादी के लिए इतनी नाराज़गी व्यक्त नहीं कि जितनी मीता के आचरण पर की। सास ने बहू के लिए एक आचार–विचार संहिता बनाकर दी। जैसे– "मीता अब शादी के बाद ही इस घर में आयेगी। भविष्य में वह बाल नहीं कटवायेगी। हाथ में चूड़ियाँ डालने की आदत डालेगी। शादी में सिर ढँकेगी। घर में मेहमान रहेंगे तब तक साड़ी पहनेगी। लोगों के सामने ध्रूव को नाम लेकर नहीं पुकारेगी।"[4] इसके द्वारा समाज में वैवाहिक और यौन संबंधों में होनो वाले परिवर्तन को हम देख सकते हैं।

विधवा पुनर्विवाह समायोजन :-

आजकल समाज में विधवा स्त्री के प्रति भी परिवार में सहानुभूति का वातावरण प्रकट किया जाने लगा है। वर्तमान संदर्भ समाज में विधवा पुनर्विवाह के लिए सहयोग दिया जा रहा है। इसलिए समाज अनुशंसा करता है कि पति या पत्नी मृत्यु के बाद जीवन साथी के रूप में पुनर्विवाह करें। परिणामस्वरूप यह उन लोगों के पुनर्वास का मार्ग प्रशस्त करता है जिन्होंने इपने पति या पत्नी को खो दिया है।

पिता के अधिकारों में कमी और अन्य सदस्यों का बढ़ता महत्त्व :-

पहले के समय में परिवार में पिता की भूमिका बहुत महत्त्वर्ण होती थी। वह ही आय–व्यय का लेखा–जोखा रखते थे। सभी निर्णय लेने का अधिकार उन्हें ही रहता था। पूरे परिवार पर उनकी सत्ता रहती थी, परंतु अब सभी निर्णयों में पिता के अलावा अन्य पारिवारिक सदस्यों की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण हो रहा है। अब कुछ निर्णयों में पत्नी और बच्चों की भागीदारी को भी महत्त्व दिया जा रहा है। अब बच्चों को सुधारने या समझने के लिए पहले की तरह मार–पीट का सहारा नहीं लिया जाता है, बल्कि इसके स्थान पर उन्हें समझाकर सही रास्ते पर लाने का प्रयत्न किया जाता है।

सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से स्त्रियों की स्थिति में सुधार :-

वर्तमान समय में स्त्रियों को पहले की तरह चारदीवारी में कैद करके नहीं रखा जाता है। आज हम इस कहावत सच देख सकते हैं कि महिलाएँ राष्ट्र की आँखें होती हैं। अब इन्हें नौकरी करने, व्यवसाय करने, व्यापार करने आदि की स्वतंत्रता प्राप्त है। वे पुरुषों के लिए भार–स्वरूप नहीं रही, अब वे अपना भरण–पोषण कर सकती है। स्त्रियों की आर्थिक दशाओं में सुधार होने के कारण सामाजिक दशा में भी सुधार अवश्य हुआ है और अब उनको पारिवारिक मसलों में महत्त्व दिया जाने लगा है। आज वे सामाजिक जीवन से जुड़ी प्रायः सभी गतिविधियों में भाग लेती हैं। इस परिस्थिति की उल्लेख मालती जोशी जी की कहानी 'आखिरी शर्त' में देख सकते हैं। मम्मी–पापा कहने के बाद भी कुछ परिवर्तन नहीं हुआ। उस समय माँ–बाप कहा करते थे कि लड़की को बी. ए. पढ़ाने पर एम.ए. लड़का कहाँ से लायेंगे। कुसुम ने जब जाना कि दीदी मधु ब्याह करने जा रही हैं तब उसने उसे टोका कहा कि लड़की प्रिलिम की परीक्षा दे रही है। हो सकता है आई.ए.एस. में निकल जाए। उसकी ब्याह अभी करने में क्या तुक है। वह स्कॉलर है। उसे अपना कैरियर बनाने दो। अपने परिवार में कोई तो कलेक्टर

वने। तब आधुनिक युग की माँ ने भी वही कहा जो पुराने जमाने की माँ ने कहा था– "उस कलक्ट रानी के लिए हम कमिश्नर दूल्हा कहाँ से लाएँगे यह भी सोचा है।"[5] हालांकि इन परिवर्तनों ने परिवार में कुछ संघर्ष की दशाओं को भी जन्म दिया है।

नातेदारी का घटता महत्व :-

वर्तमान समय में लोगों के पास समय की अत्यंत कमी जिसके कारण लोग अपने नातेदारों, रिश्तेदारों से दूर होते चले जा रहे हैं। आजकल पति–पत्नी दोनों कार्यभार की वजह घर से बाहर जाना पड़ता है। इसलिए रिश्तों के लिए समय दे नहीं सकता। इसी कारण लोगों के संबंधों में घनिष्ठता की कमी होती चली जा रही हैं। इन आधुनिक परिवर्तनों से नातेदारों का महत्व दिन प्रतिदिन घटता ही जा रहा है।

परिवार में अस्थायित्व व्याप्त होना :-

वर्तमान समय में परिवार अपने स्थायित्व को बनाए रख पाने में असमर्थ होता जा रहा है। पति–पत्नी द्वारा अपने कर्तव्यों के जगह पर अपने अधिकारों को प्राथमिकता दी जाने लगी है। सभी अपनी आवश्यकताओं को किसी भी कीमत पर पूरा करने में मशगूल हैं। इन कारणों से परिवार में तनाव की स्थिति पैदा होने लगी है और इसके परिणामस्वरूप पति–पत्नी में तलाक की घटनाएँ सामने आने लगी हैं। यदि अपने चारों ओर के नगरीय परिवेश को ध्यान पूर्वक देखा जाए तो यह स्पष्ट होता है कि इन क्षेत्रों में तलाक की घटनाएँ दिन प्रति दिन बढ़ती ही चली जा रही है। यह परिवार के स्थायित्व के लिए उचित नहीं है।

परिवार के सहयोगी आधार में परिवर्तन :-

वर्तमान समय में व्यक्तिवादिता का भाव बढ़ता ही जा रहा है। व्यक्ति अपने स्वार्थों की पूर्ति में लगा हुआ है। आज स्वार्थ के लिए माता–पिता, भाई–बहन और अन्य सदस्यों के स्थान पर अपने हित अधिक महत्त्वपूर्ण हो गए हैं। इस कारण से पारिवारिक संगठन पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इस संदर्भ का प्रसंग हमें मालती जोशी की कहानी 'साँस–साँस पर पहरा बैठा' कहानी में से मिलता है। इस कहानी की एक पात्र सीमा की माँ एम.बी. बी.एस. पढ़कर किसी प्रैक्टिस किये बिना घर पर रही। मालती जी की नज़र में कुछ पढ़ी–लिखी महिलाएँ निरुपयोगी जीवन जीती हैं। अपनी पढ़ाई–लिखाई बर्बाद करने का उन्हें पूरा अधिकार है परंतु यह बात डॉक्टरों पर लागू नहीं होती। उन्हें इस बात का प्रमाण हमें 'साँस–साँस पर पहरा बैठा' कहानी में ऐसा मिलता है–"डॉक्टर यदि घर में बैठ जाए तो यह अन्याय ही होगा न? एक विद्यार्थी को डॉक्टर बनाने में शासन का कितना खर्च आता है, जानती हो? और तुम जैसे लोग उस कर्च को मिट्टी कर देती हैं। एक तो तुमने एक होनहार छात्र की सीट छीन ली, फिर उसका उपयोग भी नहीं किया। यह दोहरा अन्याय है"[6]। अब पारिवारिक सदस्यों में पहले के समान सहयोग, त्याग, प्रेम आदि की भावना का लोप होने लगा है। आज परिवार की नियंत्रण शक्ति अत्यंत कमज़ोर हो रही है।

निष्कर्ष :- इस इकाई के माध्यम से निःसंदेह रूप से कहा जा सकता है कि मालती जी ने अपने कहानी साहित्य में विविध विषयों को यथार्थ रूप से अभिव्यक्त कर अपनी अप्रतिम सृजन प्रतिभा का परिचय दिया है।

परिवार के प्रकार्य, परिवार की संरचना पर निर्भर करता है और समाज की प्रकृति, परिवार के प्रकार्यों को निर्धारित करती है। परिवार के प्रकार्य, जैसे– बच्चों का प्रजनन के बाद पोषण एवं संरक्षण प्रदान करना, उन्हें रोटी, कपड़ा और मकान उपलब्ध करवाना, यौन व्यवहार को नियंत्रित करना, समाजीकरण संस्कृति को पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित करना, भावनात्मक प्रोत्साहन, सामाजिक पहचान दिलवाना आदि कार्य परिवार द्वारा किये जाते रहे हैं। परन्तु आधुनिक भारतीय परिवार में इन कार्यों में परिवर्तन हो रहे हैं, लेकिन इस परिवर्तन में भी परंपरागत परिवार के लक्षणों को देखे जा सकते है।

संदर्भ सूची :-

1. मैकाइवर –सोसाइटी (Society), पृ. सं.–238
2. मालती जोशी – औरत एक रात है, स्मृति कल्प, पृ. सं.–84
3. स्मारिका – 1995, पृ. सं.– 42
4. मालती जोशी – मालती जोशी की कहानियाँ, स्नेहबंध, पृ. सं.– 80
5. मालती जोशी – आखिरी शर्त, पृ. सं.–10
6. मालती जोशी – पिया पीर न जानी, साँस साँस पर पहरा बैठा, पृ. सं.–127

Mail ID : jacquelinejhon@gmil.com, Phone No. : 9841777187